International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 886-887

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 886-887
www.allresearchjournal.com
Received: 19-11-2016
Accepted: 26-12-2016

गीता कुमारी
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, गवेषिका विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
गीता कुमारी
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, गवेषिका विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

एखनो प्रारंगिक अछि 'दू कुहेसक बाट'

गीता कुमारी

सारांशः
कम शब्द मे बहुतरास बात कहनिहार, साहित्यकें सूत्रमे लिखनिहार, निश्च्छल जल सदृश्य बहनिहार, नव पौधकें उचित खाद, जल पटौनिहार, साहित्यमे खूब लम्बा डाँरि खिचनिहार, एहन जे छवि सोंझाँमे ठाढ़ होइत अछि ओ थिकाह–जीवकान्त। ई अपना समयक प्रायः सभसँ बेसी लिखक्कड़ साहित्यकार छलाह तकरे परिणाम थिक जे कविता, कथा, बाल साहित्य, आत्मकथा, उपन्यास अतिरिक्त ई निबन्ध, समीक्षा, पोथी–परिचय आ सामाजिक समस्या पर गंभीरतापूर्वक टिप्पणी लिखलनि जे मैथिली साहित्यक निधि प्रमाणित भेल। ई पाँच गोट उपन्यास लिखलाह– ''दू कुहेसक बाट'', ''पीयर गुलाब छल'', ''नहि कतहु नहि'', ''पनिपत'' आ ''अग्निबान''। मुदा, एतय हम, ''दू कुहेसक बाटक'' चर्चा कऽ रहल छी।

प्रस्तावनाः
''दू कुहेसक बाट'' जीवकान्तक पहिल उपन्यास थिक जकर प्रकाशन 1968ई. मे भेल छल। एहि उपन्यासक मुख्य पात्र जितेन्द्र निम्नमध्यवर्गीय परिवारसँ अबैत अछि। सम्पूर्ण उपन्यास एकरे पर केन्द्रित अछि। गरीब रहितहु जे अपन उच्च शिक्षाकें सुचारू रखबाक लेल गामक बगलक मधुबनी कॉलेजमे नाम लिखबैत अछि। जितेन्द्रक विवाह अल्पवयसमे भऽ जाइत अछि। मिथिलाक तत्कालीन सामाजिक रीति–रिवाजक अनुसार विवाहक लेल पुरुषक आत्मनिर्भता आवश्यक नहि बुझल जाइत छल। मुदा आब समाजक सोचमे परिवर्तन दृष्टिगत होइत अछि। विवाहसँ पहिने देखल जाइत अछि कि पुरुष आत्मनिर्भर अछि कि नहि। घर–दवार, जमीन–जायदाद बादमे देखल जाइत अछि। अपन आगाँक शिक्षा के सुचारू रूपसँ चलयबाक लेल ओ अपन ससुरसँ किछु द्रव्य–याचना करबाक प्रयास करैत अछि, मुदा ओतय ओकरा निराशा हाथ लगैत अछि। अंतमे ओ अपना गाम दिस घुरबाक निर्णय करैत अछि। ओ जनैत अछि जे मिथिलामे खेतीक समस्या नगण्य अछि। तत्पश्चात् ओ ट्यूशन पढ़ेबाक निर्णय लैत अछि आ पढ़ेनाय शुरू सेहो करैत अछि। जखन ओकर मित्रकें अर्थात् नित्या के ई बात ज्ञात होइत अछि तऽ ओ जितेनद्रकें ट्यूशन छोड़बाक लेल कहैत अछि। ओ जितेन्द्र कें कहैत अछि जे जा कऽ प्रिंसिपल सऽ बात करै किछ–ने–किछ रस्ता निकलत, किछु मदद जरूर भेटतै। प्रिंसिपल अपन मजबुरी कहैत छथिन आ ससुर सवभावसँ कंजूस। जितेन्द्र सभटा प्रयास कयलाक बाद हतोत्साह भऽ जाइत अछि.... ''धुत्। एहेन परिस्थितिकें बहुत टारबाक कोशिश करैत आयल अछि ओ, मुदा ओकर दुर्भाग्य ओकरासँ एक–एक बून्द आत्म–सम्मान गारि–गारिकऽ बहार करैत अयलैक अछि।''[1]

एतय उपन्यासकार ग्राम्य जीवनक परिवेश पर सेहो मध्यम प्रकाश दैत छथि। मिथिलामे अर्थोपार्जनक एकमात्र आधार कृषि छैक जे मेघ दिसि उदग्रीव जकाँ मुँह बौने कृषक सभक समस्या कहैत अछि। मेघ बरसतैक बुन्न पड़तैक तखन खेत सींचित होयतैक, जँ रौदी होयतैक तँ अन्नाभावमे परिवारक भरण–पोषण कठिन होयतैक। जँ बाढ़ि औतैक तँ समस्त पूँजी ओ परिश्रम ओहिमे भसिया जयतैक। अतिवृष्टि आ अनावृष्टिसँ थकुचल ग्राम्य जीवनक चित्रण बड़ मार्मिक अछि।

एहि उपन्यासमध्य शिक्षित युवकक दुर्भाग्यक कथा कहल गेल अछि। प्रसिद्ध विद्वान, समीक्षक आ इतिहासकार डॉ. देवकान्त झाक अनुसार ''दू कुहेसक बाट (1968) जीवकान्तक एक व्यंग्यात्मक उपन्यास थिक जे आजुक युवाक कपोल–कल्पना ओ हवाइकिला गढ़बाक मानसिकता पर चोट करैछ। ई देखबैत अछि जे कोना दिगभ्रमित ओ लोकनि अपन लक्ष्यक प्रति विभ्रमित रहैत छथि। नायक जितेन्द्र दरिद्रताक दंश झेलितो युवासुलभ रोमानी प्रेमक रंग करैत अछि। एक ग्रामवालासँ विवाहिता रहितो ओ अमिताक संग प्रेम–सम्बन्ध जोड़ि दुनूक बीच दयनीय बनैत अछि। गरीबी ओ प्रेम–रोमांसक तीव्र वैषम्यक संग नायकक मानसिक घात–प्रतिघात तथा पत्नी ओ प्रेमीकाक द्वन्द्वात्मक झाँकी उपन्यासक रोचकतामे वृद्धि करैत अछि।''[2]

मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे नवीनता अनबाक प्रयास जीवकांतक उपन्यास सबमे कयल गेल अछि। हिनक उपन्यास सभमे आधुनिक जीवनक सामान्य विवाहेत्तर समस्याक चित्र सब भेटैत अछि। ई सम्पूर्ण उपन्यास युवावर्गक समस्या पर आधारित अछि। चाहे ओ बेरोजगारी होय, संसाधनक कमी अथवा प्रेमक प्रति आसक्ति। ई एक गोट एहन छात्रक कथा–व्यथा अछि जे जन्म लेलक निम्नमध्यवर्गीय परिवारमे मुदा महत्त्वाकांक्षा पोसलक मध्यवर्गीय परिवारक। स्वाभिमान विरूद्ध कोनो काज करब ओकर संस्कारक 'जाठि' के हिला दैत अछि। जितेन्द्रक रूपमे जीवकांत मिथिलाक अधिकांश साधनविहीन एवं आत्मबल रहित छात्रक चरित्र एवं मनोविज्ञानक विश्लेषण कयने छथि। जितेन्द्र अर्न्तद्वन्द्वकें कोनों सफल मनोवैज्ञानिक जकाँ मनोविश्लेष्णात्मक ढंगसँ प्रस्तुत करैत छथि– ''खपड़ाक तरेत्तर धुआँ औनाइत छलैक कोनो विचारधारा जकाँ, जे अभिव्यक्ति लेल औनाइत रहितो अव्यक्त रहि जाइत छल।''(3)

जितेन्द्र बहुत किछु करऽ चाहैत अछि अपना लेल अपन परिवार लेल मुदा दुर्भाग्य वश किछु कऽ नहि पबैत अछि। ओकर स्थिति बहुत किछु आजुक युवावर्गसँ मिलैत–जुलैत अछि। वर्तमान समय सेहो युवावर्ग लेल घोर अशान्तिक समय अछि। बढ़ैत जनसंख्या नाना प्रकारक समस्याक जननी बनि गेल अछि। तत्पश्चात शिक्षाक लचर व्यवस्था जे डिग्रीधारी छात्रक फौज तऽ इकट्ठा कऽ लैत अछि मुदा रोजगारउन्मुख नहि भेलाक कारणें कतेको भविष्यकें चौपट कऽ दैत अछि आ जे कनि कसर बचि जाइत अछि ओ सरकारी तंत्रक भेंट चढ़ि जायत अछि। उपन्यासकार एहि उपन्यासक माध्यमसँ देखेबाक प्रयास करैत दथि जे आजुक युवावर्ग विभिन्न प्रकारक समस्या सँ ओझरायल अछि। जीवकान्त सामाजिक यथार्थकें चुट्टासँ पकड़ि जनसाधारणक सोझा रखबामे सिद्धस्त छलाह। हिनक प्रसंग आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रथम इतिहासकार डॉ. जयकान्त मिश्र कहैत छथि– ''ई अवश्यमेव मैथिली उपन्यासकें एक नव आयाम देलक अछि कारण जे एहिसँ पूर्वक मैथिली उपन्यास मुख्यतः मात्र सामाजिक विडम्बना आ समस्याकें लए चलैत छल, जकरा हरिमोहन झा अद्‌भुत चमत्कारक संग पूर्वे समृद्ध कएने छथि। तें ई लेखक विषय–वस्तुमे नवीनता अनलनि अछि। हिनक शैलीमे जीवनक स्फुरण भरल अछि, आओर पाठक डेग–डेग पर अपन धरतीक सौरभ सहज आओर प्रतीकात्मक वागभंगीमे पबैत छथि।''(4)

जितेन्द्र हो अथवा नित्या दुनू वर्तमान युवावर्गक प्रतिनिधित्व करैत अछि। कियो अपन प्रेमिका लेल संसारसँ विरक्त भऽ जाइत अछि तऽ कियो आर्थिक समस्याक सामना करैत मोनमाफिक जीवनसंगिनीक अभावमे कुंठित भऽ जाइत अछि। ओ बजैत नहि अछि मुदा गोइठा जकाँ नहुए–नहुए जरैत अवश्य अछि। हिनक उपन्यासक प्रसंग मायानन्द मिश्रक कहब छनि– दू कुहेसक बाटमे स्वामीमानी, भावुक एवं अन्तर्मुखी प्रकृतिक एकटा निर्धन किशोरक अन्तः संघर्षक चित्रण अछि।''(5)

निषकर्षतः एतय जीवकान्त कोनो उत्कृष्ट कथा कहैत छथि बात से नहि अछि मुदा ओ किशोर मनक भावक चित्रण जाहि प्रकारसँ करैत छथि से अद्वितीय अछि। युवावर्ग जाहि उत्साह आ आकांक्षा सऽ पढ़ैत छथि आ नित नव–नव सपनाक हवाइ किला बनबैत छथि ओ समयक संग चाहक भाप जकाँ उड़ि जाइत छैक शेष रहि जाइत अछि टुटल–भाँगल सपनाक भग्नावशेष। निश्चितरूपें ''दू कुहेसक बाट'' अनिर्णय ओ अभाग्यताक उपन्यास थिक। एहि रचनाक उद्देश्य होनहार युवक लोकनिक मोनसँ भ्रम आ अज्ञानक कुहेसकें हटायब थिक।

संदर्भ–सूचीः

1. जेना कोनो गाम होइत अछि, संकलन आ संपादन– प्रदीप बिहारी, प्रकाशक– चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय, संस्करण– 2015, पृ.– 54
2. आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास, देवकान्त झा, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2017, पृ.– 196
3. जेना कोनो गाम होइत अछि, संकलन आ संपादन– प्रदीप बिहारी, प्रकाशक– चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय, संस्करण– 2015, पृ.– 71
4. मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. जयकान्त मिश्र, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संसकरण– 1998, पृ.– 235
5. मैथिली साहित्यक इतिहास, मायानन्द मिश्र, प्रकाशक– किशुन संकल्प लोक, किसुन कुटीर, सुपौल, संस्करण– 2014, पृ.– 262